PAPER NAME

A Research paper.pdf

WORD COUNT	CHARACTER COUNT
3551 Words	**10735 Characters**
PAGE COUNT	FILE SIZE
11 Pages	**97.8KB**
SUBMISSION DATE	REPORT DATE
Apr 3, 2026 10:46 AM GMT+5:30	**Apr 3, 2026 10:46 AM GMT+5:30**

0% Overall Similarity

This submission did not match any of the content we compared it against.

- 0% Internet database
- 0% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 0% Submitted Works database

Excluded from Similarity Report

- Bibliographic material
- Quoted material
- Cited material
- Small Matches (Less then 14 words)

शोध पत्र

तकनीकी समाज में नैतिक मूल्यों का संकट: शिक्षा और सामाजिक जीवन के संदर्भ में एक समालोचनात्मक अध्ययन

आयुष कुमार*

डॉ. बीना इन्द्राणी**

- पी-एच.डी. शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,उत्तर प्रदेश,226007. ई.मेल. Ayushkumar8756c25y@gmail.com मो. नं.8528339465
- **असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षाशास्त्र विभाग, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ,उत्तर प्रदेश,226007. ई.मेल. indrani_beena@lkouniv.ac.in मो.नं. 9451088300

शोध सार

वर्तमान युग को निस्संदेह तकनीकी समाज का युग कहा जा सकता है, जहाँ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र शिक्षा, सामाजिक संरचना, आर्थिक गतिविधियों, संचार तथा प्रशासन को गहराई से प्रभावित किया है तकनीकी विकास ने मानव जीवन को अधिक सुविधाजनक, तीव्र, कार्यकुशल और वैश्विक स्तर पर जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परंतु इसके साथ-साथ इसने समाज में नैतिक मूल्यों के गंभीर संकट को भी जन्म दिया है आज का समाज भौतिक प्रगति, उपभोक्तावाद, प्रतिस्पर्धा और तकनीकी दक्षता को जीवन की सफलता का प्रमुख मानदंड मानने लगा है, जिसके परिणामस्वरूप मानवीय संवेदनशीलता, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक विवेक और मूल्यबोध में निरंतर ह्रास देखा जा रहा है

प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य तकनीकी समाज की प्रकृति एवं विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए यह अध्ययन करना है कि तकनीकी विकास किस प्रकार नैतिक मूल्यों के संकट को जन्म देता है शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि तकनीक आधुनिक समाज में केवल सहायक साधन न रहकर मानव जीवन की दिशा निर्धारित करने वाली शक्ति बन गई है मशीनों और डिजिटल उपकरणों पर बढ़ती निर्भरता, स्वचालन, तीव्रता और दक्षता पर अत्यधिक बल ने मानवीय संवेदनाओं और नैतिक निर्णय क्षमता को प्रभावित किया है सोरोकिन (1941) के विचारों के संदर्भ में यह प्रतिपादित किया गया है कि आधुनिक समाज गंभीर सांस्कृतिक एवं नैतिक संकट से गुजर रहा है, जहाँ व्यक्ति नैतिक मूल्यों की अपेक्षा भौतिक सुखों और आधुनिकता को सर्वोच्च महत्व देने लगा है

इस शोध में शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की वर्तमान स्थिति का भी

समालोचनात्मक अध्ययन किया गया है आज की शिक्षा प्रणाली अधिकतर परीक्षा-केन्द्रित, रोजगार-मुखी और कौशल-आधारित हो गई है, जहाँ चरित्र निर्माण और मूल्य शिक्षा को गौण स्थान प्राप्त हो रहा है परिणामस्वरूप विद्यार्थी तकनीकी रूप से दक्ष तो बन रहे हैं, परंतु नैतिक रूप से कमजोर, आत्मकेंद्रित और सामाजिक दायित्वों के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं इसके अतिरिक्त, तकनीकी समाज का सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले नैतिक प्रभावों जैसे संयुक्त परिवारों का विघटन, पारिवारिक संवाद की कमी, सामाजिक अलगाव, भावनात्मक दूरी और संवेदनहीनता का भी विश्लेषण किया गया है

अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का उपयोग किया गया है शोध का निष्कर्ष यह संकेत देता है कि तकनीक स्वयं न तो नैतिक है और न ही अनैतिक, बल्कि उसका प्रभाव मानव के उपयोग, दृष्टिकोण और नैतिक नियंत्रण पर निर्भर करता है अंततः इस शोध-पत्र में यह प्रतिपादित किया गया है कि नैतिक मूल्यों के पुनर्निर्माण में शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है यदि शिक्षा प्रणाली तकनीकी विकास के साथ-साथ मूल्य-आधारित शिक्षा, मानवीय संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व को केंद्र में स्थापित करे, तो तकनीकी समाज को अधिक मानवीय, संतुलित और नैतिक बनाया जा सकता है

मुख्य शब्द- तकनीकी समाज,नैतिक मूल्य,शिक्षा और सामाजिक जीवन

प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी को विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शताब्दी कहा जाता है तकनीकी विकास ने मानव जीवन को अभूतपूर्व सुविधाएँ प्रदान की हैं और समाज के स्वरूप को मूल रूप से परिवर्तित कर दिया है आज का मानव तकनीकी साधनों के माध्यम से न केवल कार्य करता है, बल्कि विचार, संवाद और निर्णय भी करता है (सोरोकिन, 1941, पृ. 13, 17, 79)

शिक्षा, संचार, अर्थव्यवस्था, प्रशासन तथा सामाजिक जीवन सभी क्षेत्रों में तकनीक की निर्णायक भूमिका स्थापित हो चुकी है परिणामस्वरूप आधुनिक समाज को तकनीकी समाज के रूप में पहचाना जाने लगा है

प्रायः तकनीकी प्रगति ने जीवन को अधिक सरल, तीव्र और प्रभावी बनाया है, परंतु इसके साथ-साथ अनेक नैतिक प्रश्न भी उत्पन्न हुए हैं भौतिक उन्नति और तकनीकी दक्षता को सर्वोच्च मूल्य मानने की प्रवृत्ति ने मानवीय संवेदनाओं,

नैतिक जिम्मेदारियों और सामाजिक मूल्यों को हाशिए पर धकेल दिया है आज ईमानदारी, सहानुभूति, सहयोग, कर्तव्यबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे नैतिक मूल्य कमजोर पड़ते दिखाई देते हैं यह स्थिति केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचना और शिक्षा व्यवस्था को भी प्रभावित कर रही है

शिक्षा, जो किसी भी समाज में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की संवाहक मानी जाती है, वर्तमान तकनीकी युग में अपने मूल उद्देश्य से भटकती प्रतीत होती है आज शिक्षा प्रणाली अधिकतर रोजगारोन्मुखी, प्रतियोगी और तकनीक-केन्द्रित बन गई है, जिसमें चरित्र निर्माण और मूल्यपरक शिक्षा को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पा रहा है इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी तकनीकी रूप से सक्षम तो बन रहे हैं, किंतु नैतिक दृष्टि से असंतुलित होते जा रहे हैं

वर्तमान विश्व मूल्यों के संकट के अभूतपूर्व दौर से गुजर रहा है आज से बहुत पहले ओसवाल्ड स्पेंग्लर (Oswald Spengler), श्वट्जर (Schweitzer), टॉयनबी (Toyanbee), सॉरोकिन (Sorokin) तथा अरविन्द (Aurobindo) जैसे अध्येताओं ने नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों के ह्रास से उत्पन्न होने वाले खतरों का अनुभव कर लिया था श्वट्जर ने मूल्यों के पतन से आच्छादित भौतिक प्रगति से निराश होते हुए लिखा था कि ‘अन्धकार के समय में हमने एक अंधेरी यात्रा का आरम्भ किया है “ आज मनुष्य का सम्पूर्ण ज्ञान वैज्ञानिक प्रयोगों में सिमटकर रह गया है मानव के ये प्रयोग अपने अन्तिम लक्ष्य ‘मानवता’ में वृद्धि करने के लिए नहीं बल्कि अपने नैतिक पतन, स्वार्थ, अहंकार और संकीर्णता पर पर्दा डालने के लिए ही हैं (बैरवा, 2017)

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र तकनीकी समाज में नैतिक मूल्यों के संकट का शिक्षा और सामाजिक जीवन के संदर्भ में समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है यह अध्ययन तकनीकी विकास और नैतिकता के बीच संबंधों को समझने का प्रयास करता है तथा यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि किस प्रकार शिक्षा नैतिक पुनर्निर्माण में एक प्रभावी भूमिका निभा सकती है

शोध के उद्देश्य

1. तकनीकी समाज की प्रकृति और विशेषताओं का विश्लेषण करना

2. तकनीकी विकास के संदर्भ में नैतिक मूल्यों के संकट की पहचान करते हुए शिक्षा प्रणाली में उनकी वर्तमान स्थिति तथा सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले

नैतिक प्रभावों का विश्लेषण करना

3. नैतिक पुनर्निर्माण में शिक्षा की भूमिका को रेखांकित करना

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है शोध पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, शैक्षिक रिपोर्टों तथा विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों का अध्ययन किया गया है उपलब्ध साहित्य के समालोचनात्मक विश्लेषण के माध्यम से निष्कर्ष निकाले गए हैं

तकनीकी समाज की प्रकृति और विशेषताए

तकनीकी समाज वह सामाजिक संरचना है जिसमें मानव जीवन का संचालन मुख्यतः विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर आधारित साधनों और प्रणालियों के माध्यम से होता है इस प्रकार के समाज में तकनीक केवल सहायक उपकरण नहीं रह जाती, बल्कि वह मानव गतिविधियों, निर्णय प्रक्रियाओं और जीवन-शैली को निर्देशित करने वाली शक्ति बन जाती है दैनिक जीवन से लेकर शिक्षा, उत्पादन, प्रशासन और संचार तक प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी उपकरणों की व्यापक उपस्थिति स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है

तकनीकी समाज की प्रमुख विशेषता मशीनों और डिजिटल उपकरणों पर बढ़ती निर्भरता है, जिसके कारण मानवीय श्रम का स्थान स्वचालित प्रणालियाँ लेती जा रही हैं कार्यों में तीव्रता, सटीकता और दक्षता को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है, जिससे मानवीय संवेदनाओं और नैतिक विवेक की उपेक्षा होने लगती है इसके अतिरिक्त, भौतिक सुख-सुविधाओं की उपलब्धता को जीवन की सफलता का प्रमुख मानदंड माना जाने लगा है

सूचना एवं संचार तकनीकों के तीव्र विकास ने समाज को वैश्विक स्तर पर जोड़ दिया है, परंतु इसके साथ-साथ सामाजिक संबंध अधिक औपचारिक और यांत्रिक होते जा रहे हैं इस समाज में सफलता का मापदंड नैतिक मूल्यों के स्थान पर उत्पादकता, लाभ और प्रतिस्पर्धा बन गया है परिणामस्वरूप मूल्यबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनशीलता धीरे-धीरे कमजोर होती जा रही है, जो तकनीकी समाज की एक गंभीर चुनौती के रूप में उभरकर सामने आती है

तकनीकी विकास के संदर्भ में नैतिक मूल्यों के संकट की पहचान

तकनीकी विकास ने मानव जीवन को अनेक दृष्टियों से सरल, सुविधाजनक और प्रभावी बनाया है, किंतु इसके साथ-साथ उसने समाज में गंभीर नैतिक समस्याओं को भी जन्म दिया है तकनीक-प्रधान समाज में मानव जीवन की गति और भौतिक उपलब्धियाँ तो बढ़ी हैं, परंतु नैतिक विवेक और मानवीय संवेदनशीलता में निरंतर गिरावट देखी जा रही है आधुनिक व्यक्ति तकनीकी साधनों पर अत्यधिक निर्भर होता जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप आत्मकेंद्रित प्रवृत्तियों का विकास हो रहा है

डिजिटल संचार माध्यमों और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने संवाद के अवसरों को तो बढ़ाया है, परंतु वास्तविक मानवीय संपर्क और भावनात्मक जुड़ाव को कमजोर किया है आभासी संबंधों की प्रधानता ने सामाजिक संबंधों को औपचारिक और सतही बना दिया है इसके फलस्वरूप सहानुभूति, करुणा और पारस्परिक सम्मान जैसे नैतिक मूल्य प्रभावित हो रहे हैं

नैतिक मूल्यों का यह संकट ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के ह्रास, उपभोक्तावादी मानसिकता के विस्तार, व्यक्तिगत लाभ को नैतिक दायित्वों से ऊपर रखने की प्रवृत्ति तथा मानवीय संबंधों में बढ़ती संवेदनहीनता के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है साथ ही, समाज में हिंसा, असहिष्णुता और अनैतिक आचरण की घटनाओं में भी वृद्धि हो रही है यदि तकनीकी साधनों का उपयोग विवेकपूर्ण और नैतिक नियंत्रण के बिना किया जाता रहा, तो तकनीकी विकास समाज के नैतिक ताने-बाने को गंभीर रूप से क्षति पहुँचा सकता है

सोरोकिन (1941) के अनुसार – आधुनिक समाज गंभीर सांस्कृतिक एवं नैतिक संकट से गुजर रहा है उनके शब्दों में – वर्तमान युग में व्यक्ति नैतिक मूल्यों को भूलकर भौतिकता की चकाचौंध और सांसारिक सुखों के पीछे पागल है आधुनिकता को जीवन के सर्वोच्च मूल्य के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है

शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन

शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है शिक्षा के माध्यम से ही विद्यार्थियों में सफल समायोजन की क्षमता पैदा की जा सकती है शिक्षा व्यक्ति में दो प्रकार से समाज एवं वातावरण के साथ सामंजस्य बिठाने की क्षमता उत्पन्न करने का कार्य करती है सबसे पहले शिक्षा व्यक्ति को ऐसा विवेक, ऐसी बुद्धि देती है जिससे वह

घटनाओं का व्यावहारिक विश्लेषण करके परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार कर सके और दूसरी ओर यह व्यक्ति को इतना कुशल बनाती है कि वह विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल बना सके (त्रिवेदी, 2023)

शिक्षा किसी भी समाज की आत्मा मानी जाती है, क्योंकि वही समाज के भावी नागरिकों के ज्ञान, दृष्टिकोण और चरित्र का निर्माण करती है   आदर्श शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर नैतिक, सामाजिक और मानवीय मूल्यों का संवर्धन भी होता है   किंतु वर्तमान तकनीकी युग में शिक्षा प्रणाली का स्वरूप इस मूल उद्देश्य से धीरे-धीरे दूर होता जा रहा है   आज की शिक्षा अधिकतर परीक्षा-केन्द्रित, रोजगार-मुखी और कौशल-आधारित बन गई है, जहाँ सफलता का मापदंड अंक, डिग्री और तकनीकी दक्षता तक सीमित रह गया है

विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में आधुनिक तकनीकों, डिजिटल संसाधनों और व्यावसायिक कौशलों पर तो विशेष बल दिया जाता है, परंतु नैतिक शिक्षा, मूल्यबोध, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदनशीलता जैसे पक्षों को अपेक्षित महत्व नहीं मिल पाता   पाठ्यक्रमों में नैतिक मूल्यों की चर्चा सीमित होती जा रही है और शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध भी औपचारिक होते जा रहे हैं   इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी तकनीकी रूप से सक्षम और प्रतिस्पर्धात्मक तो बन रहे हैं, किंतु उनके व्यवहार में सहानुभूति, ईमानदारी, कर्तव्यबोध और सामाजिक प्रतिबद्धता का अभाव स्पष्ट दिखाई देता है

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों की स्थिति संतोषजनक नहीं है   यदि शिक्षा को केवल ज्ञान और कौशल तक सीमित रखा गया, तो समाज में नैतिक असंतुलन और मूल्य-संकट और अधिक गहरा हो सकता है

तकनीकी विकास का सामाजिक जीवन पर पड़ने वाले नैतिक प्रभावों का विश्लेषण

तकनीकी समाज ने सामाजिक जीवन की संरचना और स्वरूप को गहराई से प्रभावित किया है   जहाँ एक ओर तकनीकी साधनों ने संचार और संपर्क को सरल बनाया है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सामाजिक संबंधों और नैतिक मूल्यों को कमजोर भी किया है   संयुक्त परिवारों का विघटन, पारिवारिक संवाद में कमी, वृद्धों की उपेक्षा तथा सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएँ आधुनिक समाज में

तेजी से बढ़ रही हैं   तकनीकी उपकरणों की अत्यधिक व्यस्तता के कारण व्यक्ति अपने निकट संबंधों से भावनात्मक रूप से दूर होता जा रहा है (पाण्डे, 2025)

तकनीकी साधनों ने भौतिक दूरी को अवश्य कम किया है, किंतु भावनात्मक दूरी को बढ़ा दिया है   डिजिटल संवाद ने मानवीय संवाद का स्थान ले लिया है, जिससे पारस्परिक समझ, सहानुभूति और संवेदनशीलता प्रभावित हो रही है   सामाजिक जीवन में नैतिक मूल्यों के पतन के प्रमुख कारणों में तकनीकी व्यस्तता, समयाभाव, तीव्र प्रतिस्पर्धा और भौतिक सफलता को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मानने की प्रवृत्ति प्रमुख है

इन प्रवृत्तियों के कारण सामाजिक सामंजस्य कमजोर पड़ रहा है और व्यक्ति अधिक आत्मकेंद्रित होता जा रहा है   समाज में सहयोग, पारिवारिक उत्तरदायित्व और सामूहिकता की भावना में कमी आ रही है   इस प्रकार तकनीकी समाज का सामाजिक जीवन पर गहरा नैतिक प्रभाव पड़ रहा है, जो सामाजिक संतुलन और नैतिक चेतना के लिए एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर रहा है

नैतिक पुनर्निर्माण में शिक्षा की भूमिका

शिक्षा का मूल उद्देश्य

तकनीकी समाज में उत्पन्न नैतिक मूल्यों के संकट के समाधान हेतु शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण एवं निर्णायक है   शिक्षा केवल सूचना, ज्ञान और कौशल प्रदान करने का माध्यम नहीं है, बल्कि वह जीवन-मूल्यों, नैतिक विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास का प्रमुख साधन भी है   यदि शिक्षा को केवल तकनीकी दक्षता तक सीमित कर दिया जाए, तो समाज में नैतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है

तकनीक और नैतिकता के बीच संतुलन

शिक्षा ही वह सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा तकनीकी विकास और नैतिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जा सकता है   तकनीकी प्रगति को मानवीय दृष्टिकोण और नैतिक नियंत्रण के साथ जोड़ना शिक्षा का प्रमुख दायित्व होना चाहिए

पाठ्यक्रम में मूल्य-आधारित शिक्षा का समावेश

नैतिक पुनर्निर्माण के लिए पाठ्यक्रम में नैतिक एवं मूल्य-आधारित शिक्षा का प्रभावी समावेश अनिवार्य है   यह शिक्षा केवल सैद्धांतिक न होकर व्यवहारिक

और जीवनोपयोगी होनी चाहिए, जिससे विद्यार्थी नैतिक निर्णय लेने और जिम्मेदार आचरण अपनाने में सक्षम बन सकें हमारे जीवन में जीवन मूल्य शिक्षा का बहुत महत्व है मूल्य शिक्षा के माध्यम से हम व्यक्ति समाज में सकारात्मक मूल्यों के क्षमताओं और अन्य प्रकार के व्यवहार को विकसित करता है जिसमें वह रहता है मूल्य शिक्षा का अर्थ है, दैनिक जीवन में कौशल, व्यक्तित्व के सभी दौरों को समझना इसके माध्यम से छात्र जिम्मेदारी, अच्छी या बुरी दिशा में जीवन का महत्व, लोकतांत्रिक तरीके से जीवन यापन, संस्कृति की समझ, महत्वपूर्ण सोच आदि को समझ सकते हैं मूल्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधिक नैतिक और लोकतांत्रिक समाज बनाना है

शिक्षक की भूमिका

मूल्य शिक्षा जो किसी समाज एवं देश के चहुमुखी विकास का आधार है इसको आगे बढ़ाने के लिए शिक्षक वर्ग को आगे आना होगा शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसे नैतिक आदर्श, मार्गदर्शक और प्रेरक के रूप में भी कार्य करना चाहिए शिक्षक का आचरण, व्यवहार और दृष्टिकोण विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा नैतिक विकास को गहराई से प्रभावित करता है

मानवीय एवं तकनीकी शिक्षा का संतुलन

तकनीकी शिक्षा के साथ मानवीय शिक्षा का संतुलन स्थापित करना समय की प्रमुख आवश्यकता है इससे विद्यार्थी तकनीकी रूप से दक्ष होने के साथ-साथ नैतिक रूप से संवेदनशील और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बन सकते हैं

सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास

शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में सहानुभूति, सहयोग, कर्तव्यबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी प्रवृत्तियों का विकास किया जाना चाहिए, ताकि वे समाज के प्रति सजग और संवेदनशील नागरिक बन सकें

नैतिक मूल्यों का संरक्षण

यदि शिक्षा प्रणाली नैतिक मूल्यों को पुनः अपने केंद्र में स्थापित करे, तो तकनीकी समाज में भी मानवीयता, सामाजिक संतुलन और नैतिक चेतना को सुरक्षित एवं सुदृढ़ रखा जा सकता है

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि तकनीकी समाज ने मानव जीवन को अनेको सुविधाएँ, कार्यकुशलता और विकास के नए अवसर प्रदान किए हैं, किंतु इसके साथ-साथ उसने नैतिक मूल्यों के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं तकनीकी विकास ने जीवन की गति को तीव्र किया है, परंतु इस तीव्रता में मानवीय संवेदनशीलता, नैतिक विवेक और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल तत्व पीछे छूटते जा रहे हैं   परिणामस्वरूप शिक्षा प्रणाली और सामाजिक जीवन दोनों ही नैतिक असंतुलन से प्रभावित हो रहे हैं

अध्ययन यह संकेत देता है कि तकनीक स्वयं में न तो नैतिक होती है और न ही अनैतिक, बल्कि उसका स्वरूप और प्रभाव मानव के उपयोग, उद्देश्य और दृष्टिकोण पर निर्भर करता है   जब तकनीक को केवल लाभ, दक्षता और प्रतिस्पर्धा के साधन के रूप में देखा जाता है, तब वह समाज में उपभोक्तावाद, आत्मकेंद्रितता और मूल्यहीनता को बढ़ावा देती है   इसके विपरीत, यदि तकनीकी विकास को मानवीय मूल्यों और नैतिक चेतना के साथ संतुलित किया जाए, तो वही तकनीक सामाजिक विकास का सकारात्मक माध्यम बन सकती है

शिक्षा इस संतुलन को स्थापित करने का सबसे प्रभावी साधन है   शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति में नैतिक विवेक, सामाजिक संवेदनशीलता और उत्तरदायित्व की भावना विकसित की जा सकती है   यदि शिक्षा प्रणाली तकनीकी दक्षता के साथ-साथ मूल्यपरक और नैतिक शिक्षा को भी केंद्र में रखे, तो तकनीकी समाज में उत्पन्न नैतिक संकट को काफी हद तक कम किया जा सकता है

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि तकनीकी समाज में मानवता, संवेदनशीलता और नैतिकता को सुरक्षित रखने के लिए शिक्षा को मूल्य-आधारित दृष्टिकोण के साथ पुनर्गठित करना अनिवार्य है   यही इस शोध-अध्ययन का मूल प्रतिपादन एवं सार तत्व है

सुझाव

तकनीकी समाज में नैतिक मूल्यों के संकट को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षा और सामाजिक जीवन दोनों स्तरों पर ठोस एवं व्यावहारिक कदम उठाए जाएँ   तकनीकी विकास को रोका नहीं जा सकता, किंतु उसे मानवीय और नैतिक मूल्यों के अनुरूप दिशा अवश्य दी जा सकती है   इस संदर्भ में निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1. शिक्षा प्रणाली में मूल्य-आधारित शिक्षा को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए विद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर नैतिक शिक्षा, नागरिक शास्त्र, जीवन-कौशल तथा सामाजिक उत्तरदायित्व से संबंधित विषयों को केवल औपचारिक न रखकर व्यवहारिक रूप में पढ़ाया जाना चाहिए

2. शिक्षकों की भूमिका को नैतिक मार्गदर्शक के रूप में सुदृढ़ किया जाना चाहिए शिक्षक केवल विषय-ज्ञान देने वाले न होकर विद्यार्थियों के आचरण, दृष्टिकोण और मूल्यों को दिशा देने वाले आदर्श व्यक्तित्व हों इसके लिए शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नैतिक एवं मानवीय शिक्षा को विशेष स्थान दिया जाना चाहिए

3. तकनीकी शिक्षा और मानवीय शिक्षा के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है विद्यार्थियों को तकनीकी दक्षता के साथ-साथ संवेदनशीलता, सहानुभूति, सहयोग और सामाजिक प्रतिबद्धता का भी प्रशिक्षण दिया जाए, ताकि वे केवल कुशल पेशेवर ही नहीं, बल्कि जिम्मेदार नागरिक भी बन सकें

4. परिवार और समाज की भूमिका को पुनः सशक्त किया जाना चाहिए पारिवारिक संवाद, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक सहभागिता को प्रोत्साहित करने से तकनीकी व्यस्तता के कारण उत्पन्न भावनात्मक दूरी को कम किया जा सकता है

5. डिजिटल एवं सोशल मीडिया के विवेकपूर्ण उपयोग के प्रति जागरूकता बढ़ाई जानी चाहिए विद्यार्थियों और युवाओं को यह सिखाया जाए कि तकनीक का उपयोग सुविधा और विकास के लिए हो, न कि नैतिक पतन के लिए

अंततः, यदि शिक्षा, परिवार, समाज और नीतिगत स्तर पर समन्वित प्रयास किए जाएँ, तो तकनीकी समाज में भी नैतिक मूल्यों का संरक्षण और पुनर्निर्माण संभव है तकनीक और नैतिकता का संतुलन ही एक स्वस्थ, मानवीय और मूल्यपरक समाज की आधारशिला बन सकता है

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, जी. के. (2012). इंडियन सोसाइटी: इश्यूज़ एंड प्रॉब्लम्स. नई दिल्ली: एटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (पृ. 201–216)
- बैरवा, जयराम. (2017). मूल्यों का संकट: एक सामाजिक समस्या. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़ (IJRAR), 4(4), 721. https://www.ijrar.org/papers/IJRAR19D3960.pdf
- पाण्डे, रचना. (2025). सामाजिक परिवर्तन के लिए शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT), Volume 13, Issue 4 April 2025 | ISSN: 2320-2882. https://www.ijcrt.org/papers/IJCRT25A4243.pdf

- सोरोकिन, पी. ए. (1941). द क्राइसिस ऑफ आवर एज. न्यूयॉर्क: ई. पी. डटन एंड कंपनी
- सिंह, पूजा. (2024). तकनीकी परिप्रेक्ष्य में मूल्य-आधारित शिक्षा का विश्लेषणात्मक अध्ययन. IOSR जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन (IOSR-JRME), 14(5), 63–65. https://www.iosrjournals.org/iosr-jrme/papers/Vol-14%20Issue-5/Ser-1/I1405016365.pdf
- त्रिवेदी, रचना. (2023). छात्रों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर प्रभाव. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट डेवलपमेंट एंड डायलॉग (IJCDD), 4(1), 24–28. ई-ISSN: 2710-3943, पी-ISSN: 2710-3935 https://www.rehabilitationjournals.com/childhood-development-disorders/article/27/4-1-8-796.pdf

0% Overall Similarity

- 0% Internet database
- 0% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 0% Submitted Works database

NO MATCHES FOUND

This submission did not match any of the content we compared it against.

1	ijfmr.com Internet	<1%